३ सितम्बर १९९४ नवभारत टाइम्स, बम्बई ३

घर पर ठीक रहे तो पति बेहतर काम कर सकते हैं

बम्बई, २ सितम्बर (का. प्र.)। गृहणियां सिर्फ घर नहीं चलातीं, वे दफ्तर में पति से ठीक से काम भी करा सकती हैं। लेकिन उनके आसपास का माहौल अच्छा न होने पर गड़बड़ हो सकती है। खासकर किसी कंपनी की नगरी में।

इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लिमिटेड (आई. पी. सी. एल.) ने गृहणियों की इस दिक्कत को समझा है। आई. पी. सी. एल. का महाराष्ट्र गैस क्रेकर कॉम्पलेक्स बम्बई से १८० किलोमीटर दूर नागोठाणे में हैं।

नरसी मोनजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज की अनिता मधोक ने आई. पी. सी. एल. कर्मचारियों की पत्नियों के लिए कार्यक्रम तैयार किया है। उनका मानना है कि कर्मचारी की सफलता के पीछे यकीनन उसकी पत्नी होती है, लेकिन सिर्फ सफलता नहीं, असफलता में भी उसका हाथ होता है। वे कई वर्षों से पुरुष की सफलता - असफलता के संदर्भ में पत्नी की भूमिका को जांच रही हैं। उन्होंने कहा कि पत्नी के व्यक्तित्व और पति की कार्यक्षमता में निश्चित आपसी संबंध है।

आई. पी. सी. एल. में चल रहे कार्यक्रम से पता चला कि पत्नी की भी अपनी दिक्कतें होती हैं। कार्यक्रम में शामिल महिलाओं ने बताया कि दफ्तर या कारखाने में पति के तनाव से उन्हें (पत्नी को) घर पर दिक्कतें होती हैं। वे पति की मदद करना चाहती हैं, लेकिन पति उन्हें अपनी दिक्कतों के बारे में कुछ बताना नहीं चाहते हैं।

महाराष्ट्र गैस क्रेकर कॉम्पलेक्स में ८४०० कर्मचारी है। इनमें ८०० से ज्यादा महिलाएं हैं। करीब ६८० अफसर है, जिनकी औसत उम्र २९ साल है। कॉम्पलेक्स परिसर में रहने वाली ९५ प्रतिशत गृहणियां स्नातक हैं। आई. पी. सी. एल. ने परिसर में बसायी नगरी में कर्मचारियों को सारी सुख सुविधा दे रखी है, पर अब उन्होंने कर्मचारियों की मनोवैज्ञानिक जरूरतों पर ध्यान देना शुरू किया है। गैस क्रेकर कॉम्पलेक्स के कार्यकारी निदेशक सी. एस. पेटल ने बताया – 'हम सिर्फ दो जोड़ी हाथों को काम नहीं देते, उसके पूरे परिवार को जोड़ते हैं।'